जनवरी-मार्च, 2023

समसामयिक हाइकु संचयनिका

हाइकु मञ्जूषा

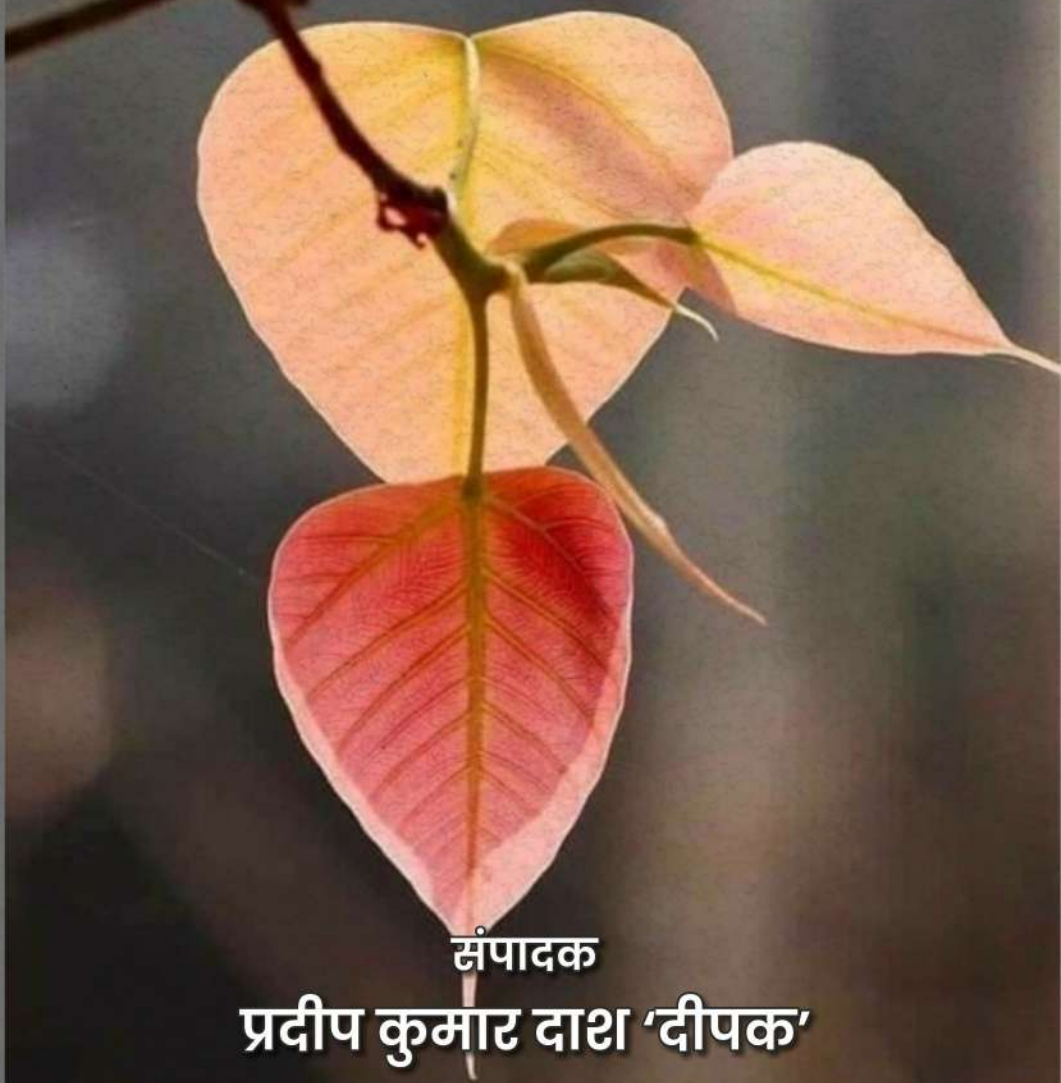

संपादक
प्रदीप कुमार दाश 'दीपक'

हाइकू मंजूषा परिवार की ओर

नववर्ष

की हार्दिक शुभकामनाएं

संपादक : **हाइकु मञ्जूषा**

हाइकु मञ्जूषा त्रैमासिक

(सदस्यता शुल्क)

एक वर्ष	-	**400 रुपये (रजिस्टर्ड डाक से)**
पाँच वर्ष	-	**1600 रुपये (रजिस्टर्ड डाक से)**

Account detail : PRADEEP KUMAR DASH

A/c No. : 3282604179, IFSC : CBIN0281208

Central bank of India, Sitapur, (C.G.)

Mob. 7828104111

हाइकु मञ्जूषा

समसामयिक हाइकु संचयनिका

जनवरी-मार्च : 2023 (त्रैमासिक)

संपादक

प्रदीप कुमार दाश 'दीपक'

संरक्षक

डॉ. मिथिलेश दीक्षित

संपादक मण्डल

अविनाश बागड़े (नागपुर)

देवेन्द्र नारायण दास (बसना)

केशव मोहन पाण्डेय (नई दिल्ली)

प्रकाशन स्थल : साँकरा, जिला-सारंगढ़ (छ.ग.) पिन – 496554

मो.नं. – 7828104111

संपादकीय...

हाइकु दिवस के परिप्रेक्ष्य में 04 दिसम्बर 2022 को भारतीय हाइकु मंच की ओर से बी.एम. कॉलेज खड़गपुर में आदरणीय मित्रवर हाइकुकार अजय चरणम् जी की अध्यक्षता में आयोजित हाइकु गोष्ठी में अब तक के प्रकाशित "हाइकु मञ्जूषा" के चारों अंकों पर विशेष चर्चा हुई। इस अवसर पर शहर के शिक्षाविद् एवं साहित्यकारों में आ. ज्योतिष चन्द्र, प्रो. अमित कुमार सिंह, प्रो. रंजन कुमार सिंह, प्रो. जयप्रकाश नारायण सिन्हा, प्रो. किरण कुमारी, प्रो. रतन कुमार, प्रो. हरिवंश सिंह, सुनीता जी, साहित्यकार शंकर कुमार जी आदि विद्वानों की महत्वपूर्ण उपस्थिति रही । उक्त अवसर पर हाइकुकार आदरणीय अजय चरणम् जी एवं उपस्थित विद्वान साहित्यकारों द्वारा 'हाइकु मञ्जूषा' की उपादेयता पर चर्चा करते हुए स्तरीय हाइकु पत्रिका के अंकों को हाइकु विधा के प्रसार में 'मील के पत्थर' मानते हुए खूब सराहना की गई जो पत्रिका हेतु बेहद गौरव का विषय है। हाइकु मञ्जूषा पत्रिका के संपादन मंडल की ओर से हाइकुकार मित्र आ. अजय चरणम् जी एवं गोष्ठी के समस्त विद्वजनों का हार्दिक आभार प्रकट करते हैं।

'हाइकु' विधा पर केन्द्रित पत्र पत्रिकाएँ निरंतर प्रकाशित नहीं हो पा रही हैं। वर्ष 2006 में मेरे संपादन में हाइकु मंजूषा के सात अंक निकले, मेरी स्वयं की कुछ परेशानियां एवं रचनाकारों के पर्याप्त सहयोग के अभाव से उस समय यह पत्रिका निरंतर प्रकाशित न हो सकी । पुनः इस पत्रिका को

पुनर्जीवित करने के प्रयास में वर्ष 2022 से अंक नियमित निकाले जा रहे हैं। इसी कड़ी में हाइकु मञ्जूषा का पांचवां अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है । हाइकुकारों के सहयोग के बिना इसे निरंतर निकाल पाना संभव नहीं होगा। आपके स्नेहिल सान्निध्य में वर्तमान पूरे भारत में हाइकु विधा पर केन्द्रित एक मात्र समसामयिक हाइकु पत्रिका "हाइकु मञ्जूषा" निकल रही है । हाइकु मञ्जूषा के इस अंक में हाइकुकारों द्वारा निरंतर प्रेषित किये गये हाइकुओं में से चयनित उत्कृष्ट हाइकुओं को प्रकाशित करने का प्रयास किया गया है। हाइकु मञ्जूषा के इस अंक में हाइकुओं का चयन गुणवत्ता आधारित है, संख्या आधारित नहीं। आगामी समय में भी विभिन्न नवीन योजनाओं के साथ गुणवत्तायुक्त हाइकुओं को प्रकाशित करने का उद्यम निरंतर रहेगा। बीसवीं शताब्दी में हाइकु विधा पर भारत में शनैः शनैः काम हो रहे थे । तकनीकी विकास के कारण इक्कीसवीं शताब्दी में बीसवीं शताब्दी की अपेक्षा हाइकु साहित्य के प्रकाशन में प्रबल इजाफा हुआ है यह संतोष का विषय है, परंतु हाइकुओं के उत्कृष्ट सृजनात्मकता पर जितना काम होना था, आज भी नहीं हो पाया है। आने वाले समय में उत्कृष्ट हाइकुओं की सृजनात्मकता पर विशेष काम हों इसी आशा व विश्वास की अपेक्षा के साथ समसामयिक हाइकु संचयनिका 'हाइकु मञ्जूषा' जनवरी-मार्च 2023 का पांचवां अंक आपके कर कमलों सहर्ष सौंपते हुए आंग्ल नव वर्ष की अनेकानेक शुभकामनाएं व हार्दिक बधाइयाँ ज्ञापित करते हैं। इति शुभम....

~ प्रदीप कुमार दाश 'दीपक'

संपादक : हाइकु मञ्जूषा

इस अंक के हाइकुकार

अजय चरणम्, अभिषेक जैन, अमिता रवि दुबे, अमिता शाह 'अमी', अलंकार आच्छा, आकांक्षा जायसवाल, आभा दवे, आर. बी. अग्रवाल, आरती परीख, आशा ज्योति, इंदिरा किसलय, इरा जौहरी, उग्रनाथ श्रीवास्तव, अंजनी कुमार 'सुधाकर', कल्पना कामदार, कविता नेमा 'काव्या', कश्मीरी लाल चावला, कुन्दन पाटिल, कुसुम पंत 'उत्साही', केशव मोहन पांडेय, केशव यादव 'सारथी', गीता पुरोहित, गोपीकिशन शर्मा 'शूलेश', गंगा पांडेय "भावुक", डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल, चिन्मय शुक्ल, ज्योतिर्मयी पंत, दिलीप सिंह दीपक, देवयानी बनर्जी, देवेन्द्र नारायण दास, निगम राज़, डॉ. नीना छिब्बर, प्रतिमा प्रधान, प्रदीप कुमार दाश 'दीपक', प्रवीण सिन्दल, पुष्पा मेहरा, पुष्पा सिंघी, पुष्पा सिन्हा, पूनम मिश्रा 'पूर्णिमा', बन्दना गुप्ता, भीकम सिंह, मनीष कुमार श्रीवास्तव, मनीष त्यागी, डॉ. मिथिलेश दीक्षित, मीनाक्षी कुमावत 'मीरा', डॉ. रघुनाथ मिश्र 'सहज', रति चौबे, राजकिशोर राजपूत, राजीव कुमार, राजीव नामदेव 'राना लिधौरी', राजेन्द्र सिंह राठौड़, रिमझिम अजय, रीमा दीवान चड्ढा, रूबी दास "अरु", लक्ष्मी शंकर वाजपेयी, वासु काफ्ले, विनय श्रीवास्तव, डॉ० विष्णु शास्त्री 'सरल', वृंदा पंचभाई, शशि मित्तल 'अमर', शुचिता राठी, सतीश राठी, सत्येन्द्र छिब्बर, स्वाति गुप्ता 'नीरव', सुधा मिश्रा द्विवेदी, सुधा राठौर, सुभाष शर्मा, सुरेन्द्र बांसल, डॉ. सुरंगमा यादव, सुशील शर्मा, सोनम, हिम्मत चोरड़िया, त्रिलोचना कौर, ज्ञान भंडारी, श्रवण चोरनेले 'श्रवण', श्रीराम साहू अकेला

❀ उत्कृष्ट हाइकु ❀

अथाह जल
खिला श्वेत कमल
शांत हृदय।

पंखों के बल
उड़ान भरे पंछी
मिट्टी से नभ।

छली भँवर
लुट लिये पराग
रो रहे पुष्प ।

तन पिंजर
उम्र कैद चिड़िया
बंद डगर।

आत्मा अमर
ईश्वर की तलाश
जारी सतत।

देह का नीड़
छोड़ चला पखेरू
नभ अनंत।

~ प्रदीप कुमार दाश 'दीपक'

पूस की रात
चाय की गर्म प्याली
तुम्हारी बात।

प्रेम अंकुर
जमाना जतन से
स्प्राउट बॉक्स।

सूर्य उदय
दिशा ललाट पर
बड़ी सी बिंदी।

~ केशव मोहन पांडेय

सुदूर प्रांत
स्थित मन्दिर स्थल
दे शांत चित्त !

रंग हजार
चली मन के द्वार
पंख पसार।

भंवरे गाये
तितली उड़ जाये
कली मुस्काये।

नीला अम्बर
चाँद झिलमिलाये
मुदित जल।

~ इरा जौहरी

पुराना ख़्वाब
आँखों की अलमारी
चाँद गवाह।

मौन दिशाएं
चमक रहा है चंदा
यादों का रेला।

फूल कपास
ढके तन की लाज
सदी से आज।

बहरूपिया
रोज बदले रूप
नभ का चांद।

बूढ़ी ठठरी
हाड़ हिलाती सर्दी
ओढ़े कथरी।

खेली खिलौने
बन गई खिलौना
वक्त की बात।

~ चिन्मय शुक्ल

निर्जन वन
गहन काली रात
चांद की बाट।

नन्हा खिलौना
दिखाए करतव
काहे का रोना !

भटक रहा
अस्तित्व तलाशता
बंजारा मन।

घूंघट हटा
छत से झाँकी धूप
चम्पई रूप।

मिटा अंधेरा
सूर्य जब निकला
हुआ सवेरा।

मनभावनी
सुखद सुहावनी
ऋतु पावनी।

प्राण सरीखे
प्रिय के संधि-पत्र
आँसू से भीगे।

निज अस्तित्व
हिमालय से ऊंचा
श्रेष्ठ व्यक्तित्व।

~ आशा ज्योति

हँसी की बीन
वादक गजोधर
लो ब्रह्मलीन।

~ गंगा पांडेय "भावुक"

होठों पे हंसी
हाथों में है गुलाब
अधूरा ख़्वाब।

~ बन्दना गुप्ता

रोमन हिन्दी
आधुनिकता भूली
हिन्दी की बिन्दी।

~ डॉ. सुरंगमा यादव

आत्मा अमर
मृद पिंजरा टूटा
पंछी निकला।

राम सत्य है
शमशान में बस
जीवन में भी ?

धर्म अधर्म
'अ' का अन्तर मात्र
इंसान बनो।

~ विनय श्रीवास्तव

सूर्य गर्वित
सभी हैं समर्पित
झुकाते शीश।

टूटी समाधि
मुस्काए फिर फूल
अरुणोदधि।

नवप्रभात
चहकते परिंदे
झूमते पात।

~ आभा दवे, मुंबई

नीला जहान
खुला सा आसमान
नई उड़ान।

~ आकांक्षा जायसवाल, SAGES सारंगढ़ (छत्तीसगढ़)

विजन वन
घन करे गर्जन
बूँदें नर्तन।

~ रिमझिम अजय, SAGES सारंगढ़ (छत्तीसगढ़)

खुली गगन
चमकती सितारें
लक्ष्य बनाएँ।

मन्द पवन
लहराती कलियाँ
मस्त भ्रमर।

~ वासु काफ्ले, काठमाडौँ, नेपाल

कुतर रही
फैशन की चुहिया
बच्चों की जीन्स।

पोंछ रही है
सफाईकर्मी आभा
धुंध के दाग।

~ अभिषेक जैन

दूल्हा बादल
संगिनी बिजुरिया
गीत मल्हार।

मन रावण
शुद्धि हो अंतर्मन
मिलेंगे राम।

~ ज्ञान भंडारी

उकडू बैठी
तेज सर्दी में धूप
अलसुबह।

पहरेदार
टॉर्च ले के निकला
रात में चाँद।

आया फाल्गुन
धरा शर्म से लाल
खिले पलाश।

झरते पात
पतझर का मास
पेड़ बीमार।

दूज का चाँद
आज घर में उगा
बरसों बाद।

रूप अनूप
अजगर से शैल
सेंकते धूप।

जर्जर पंखा
घूमता धीरे-धीरे
कोल्हू का बैल।

ब्रह्मा की भेंट
उत्कृष्ट सर्वश्रेष्ठ
बेटी की हँसी।

शरद ऋतु
थके-थके लगते
सूर्य के घोड़े।

तम का प्रेत
लगा प्रकाश बाण
हुआ अचेत।

लुटाते ख़ूब
अमृत का ख़जाना
मेघ कुबेर।

दयालु मेघ
बाँटते घूम-घूम
जल प्रसाद।

पाहुन हम
पड़ाव धरा पर
यात्रा अनन्त।

कोई आहट
संजीवनी बूटी सी
मुस्कुराहट।

विशाल बांध
बाँधे नदी के पाँव
सागर क्षुब्ध।

खोल के बाल
बैठी हुई है धूप
प्रभात काल।

कर्म का मर्म
समझाती हैं हमें
नन्ही चींटियाँ।

प्रचंड ठंड
कांप रही रजनी
चाँद के संग।

अंधेरा घुप्प
चमक रहे योद्धा
जुगनू ख़ूब।

पिता के बिना
मकान लगता है
छत विहीन।

मन का पेड़
लिपट के चूमती
यादों की बेल।

विशाल काया
बरगद का पेड़
देता है छाया।

कड़वा नीम
रखे हमें निरोग
उम्दा हकीम।

मीठे ज्यों सेव
मरुथल का मावा
रसीले बेर।

छैल छबीला
खरबूजा, मतीरा
बुझाता प्यास।

वृक्षविहीन
दिगंबर पहाड़ी
ख़ूब लजाती।

ओढ़ के बर्फ
साधना में तल्लीन
तपस्वी चीड़।

~ दिलीप सिंह दीपक

गाँव का वृक्ष
बुजुर्गों का आसरा
पक्षी बसेरा।

मनु की आँखें
संस्कारों का दर्शन
झुकी नजरें।

सुबह शोर
सांझ पक्षी बसेरा
शुभ संकेत।

पीपल छाँव
गाँव की महफिल
जग की चर्चा।

चली लहर
सित ऋतु महक
ताप शगुन।

कोई दरिंदा
काट गया जो वृक्ष
पक्षी बेघर।

~ कुन्दन पाटिल

रजत निशा
चाँदनी चहुँ ओर
मन विभोर।

~ राजकिशोर राजपूत

टूटा नभ से
चाँद मेरी छत पे
निहारे मुझे।

आकुल चाँद
बेकरारी से झांके
धरा निहारे।

~ रति चौबे

झरी चाँदनी
पिये हरसिंगार
मुग्ध संसार।

शुभ्र कँवल
अंबर मीठी झील
खिला मयंक।

चाँद खो गया
मोबाइल में होगा
वहीं मिलेगा।

~ इंदिरा किसलय

मेघ दुश्मन
शारदीय पूर्णिमा
चाँद निष्प्रभ।

~ सुधा राठौर

पगला मेघ
करता मनमानी
बरसे पानी।

~ स्वाति गुप्ता 'नीरव'

टनों अनाज
कभी भर न सका
पेट का कुआं।

मां का निधन
परिवार में शोक
टूटा घरौंदा।

~ भंवर लाल सोनी

पड़ा हथौड़ा
चाबी का ऐतबार
ताले ने तोड़ा।

पीपल वृक्ष
बाँहें फैलाये खड़े
घर में बड़े।

बोतलें खुली
भविष्य की तस्वीरें
हुई धुँधली।

बुढ़ाये पात
छोड़ गए जगह
उगी कोंपलें।

दंगे-फ़साद
सभ्यताओं ने ले ली
रेत-समाधि।

अगरबत्ती
लगा गई चिंगारी
फूटे पटाखे।

होके शहीद
बाती ने कर दिया
तम का वध।

किंतु-परंतु ?
सफलता का ट्रक
हुआ घुमंतू।

सूना आँगन
मकड़ियों ने किया
भूमि पूजन।

आयी न वर्षा
चिंता में झड़ रहे
तरु के बाल।

बरसे घन
नहाके ताज़ा हुए
ऊँघते वन।

कूकी कोयल
कानों में मिश्री घुली
माँ याद आयी।

रवि ने घूरा
बर्फ की अचकन
हो गयी गीली।

शहीद श्वेत
हरे व भगवे में
बंटता देश।

तन पे झुर्री
लिख रही फैसला
वक्त की ज्यूरी।

~ अलंकार आच्छा

मुँडेर बैठी
अलसाई सी धूप
संध्या ठहेकी।

दिवस लुप्त
समुद्र में घुलती
केसरी धूप।

संध्या फलक
क्षितिज के मस्तिष्क
सूर्य तिलक।

रवि का ठेला
समंदर में गिरा
सांझ की बेला।

स्वर्णिम संध्या
अलौकिक नजारा
पर्वत कंघा।

संध्या निखरी
काला रंग छिटके
निगोड़ी निशा।

गोधूलि बेला
दृश्य है अलबेला
जीवन ठेला।

द्वार पे खड़ी
चांद तारों की सेना
क्षितिज लाल।

बाप क्या मरा
बँटवारा जो हुआ
बच गई माँ।

कोहरा लिए
संध्या ठुमक रही
रुठे चांदनी।

निगल गया
गुरु का मान-स्थान
गूगल बाबा।

समझदार
पढ़ने में माहिर
मौन की भाषा

मौन मातम
हरपल मनाया
तन्हा जिंदगी।

बच्चों के झूले
बरगद की बांहे
छांव में राहें।

हो जो विह्वल
सब दुःखों का हल
माँ का आँचल।

उड़ जायेगी
चुलबुली चिड़िया
हुई सयानी।

चुरा ले गई
सूरज की किरणें
धूंध निगोड़ी।

फड़फड़ाती
चुलबुली ख्वाहिशें
मन पिंजर।

स्वर्णिम धूप
पश्चिम में बिखरी
मुस्काई सांझ।

चुगने आते
हमारी तन्हाइयाँ
यादों के पंछी।

मनभावन
आंगन में नाचती
शिशिर धूप।

बदल गई
जीवन परिभाषा
इश्क क्या हुआ !

पिता का ख़त
आँखों से छलकता
सुहाना वक़्त।

~ आरती परीख

करवा चौथ
पत्नी का प्यारा चाँद
बेचारा पति।

~ श्रीराम साहू अकेला

प्रभु की माया
राम हो गए बौने
रावण छाया।

बड़ा विचित्र
घर घर में पाया
रावण चित्र।

नहीं जलाया
रावण का पुतला
इतना भाया।

रावण जाप
इस युग में करें
धुलेंगे पाप।

~ निगम राज़

शरद चाँद
ताक रहा चकोर
अमृत बूंद।

~ वृंदा पंचभाई

राह निहारे
कुम्हार की देहरी
आस के दिये।

उकेरे स्वप्न
मानस कैनवास
कोरा संसार।

स्त्रैण मानस
सुलगती कानस
नेह निर्झर।

कोहरा चीर
धूप ने दी दस्तक
खिले दरख़्त।

~ मीनाक्षी कुमावत 'मीरा'

वक्त मल्हम
भरे गहन घाव
धैर्य औषधि।

दुख सागर
डूबते को उबारें
अपने लोग।

~ ज्योतिर्मयी पंत

कंदील ढूंढे
कहाँ छुपा है चांद
अमा की रात।

ताक में बैठी
मूषक को ढूंढती
भूखी है बिल्ली।

शक की ज्वाला
विश्वास को जलाती
रिश्ता तबाह।

~ रूबी दास "अरु"

दीप अकेला
अंधकार निवाला
फैला उजाला।

~ मनीष त्यागी

दीपक ज्योति
शरीर और आत्मा
चेतन सृष्टि।

दीपों का पर्व
आध्यात्मिक उत्कर्ष
मिटे अमर्ष।

दीप मालाएँ
आशाओं की लड़ियाँ
नए संकल्प।

नव चिराग
हर घर ठिठोली
अंतस दीप।

भग्न-हृदय
संवेदन के दीप
तमस छटा।

तिमिरपंथ
मंडित अँधियारे
दीपक हँसे।

तितली मन
चाँद का कैनवास
आत्म तस्वीर।

तृप्ति की आस
मृगतृष्णा जीवन
मुक्ति की श्वांस।

~ सुशील शर्मा

ओस की बूँदें
देख किरण सौत
धरा में छिपीं।

दीपक पर
बाती शलाका बैठी
बुने रोशनी।

~ पुष्पा मेहरा

मौन सुनती
दादुर - झींगुर का
आलाप रात।

लगौना आया
पगुराती भैंस के
कान चौकन्ने।

बेटे का ब्याह
द्वारे की बैठका में
पिता की खाट।

मेड़ का पेड़
दावेदार हो गये
दोनों ही खेत।

~ डॉ. सुरंगमा यादव

नेह का घृत
सद्भावना की बाती
जलाओ द्वेष।

~ गीता पुरोहित

बूढ़े मां बाप
बच्चे हुए काबिल
सूने घोसले।

ग्यान का शर
मोह-नाभि में लगा
जागा विराग।

वक्त बदला
निखरा फिर चाँद
निर्मल हुआ।

पीपल गाँछ
बोधिसत्व को ज्ञान
पंथी को छाँव।

स्नेह के पौधे
लगे घर की क्यारी
महके मन।

बिखरा मन
नीव रहित जन
एकाकीपन।

पेट की आग
शहर में अकेला
गाँव वीरान।

नई कोंपल
संभावना अनंत
नव जीवन।

सावन मास
रिमझिम बरसे
मैघों से नैन।

नेह बरसे
मन रजनीगंधा
महके प्रीत।

कटे जड़ों से
वे फिर बहार में
हरे न होते।

उतरी धूप
पेड़ों से फिसल के
दीन के घर।

केसर क्यारी
उग आए कैक्टस
खण्डित भ्रम।

शीतल हवा
ठिठुरता शैशव
सुखद धूप।

वक्त के साथ
छितराई खुशियाँ
रिश्ते संजोये।

टूटते तारे
मन्नत पूरी करे
हसीन ख़्वाब।

छाई लालिमा
संध्या उतर आई
गोधूलि वेला।

झील किनारे
बुढ़ऊ बरगद
खड़ा युगों से।

चले वाहन
दिखे भागते पेड़
कितना भ्रम।

ढलती शाम
डूब गया सूरज
जले दीपक।

~ राजेन्द्र सिंह राठौड़

क्यों जी तितली
तेरी रंगीन फ्राक
किसने सिली ?

सपना आया
बिटिया ने नभ में
प्लेन उड़ाया।

एक ही पल
दृश्यों से भर जाता
पूरा पटल।

खिल गया है
फूल कोई बाग में
रंग मैं उठी।

नियति बोली
बीतने दो रात को
होगा सबेरा।

~ डॉ. मिथिलेश दीक्षित

वन पर्वत
पर्यावरण गढ़े
सुगम बढ़े।

हरी भरी हो
अपनी वसुंधरा
रुप सुंदरा।

~ अंजनी कुमार 'सुधाकर'

सूर्य जो ढला
धूप ने झाड़ लिया
अपना पल्ला।

उषा के रंग
साँझ में भी यथावत्
जीने का ढंग।

साँझ की बेला
समुद्र में पलटी
रोली की थाली।

वक्त की धूप
कुम्हला ही जाता है
चीजों का रूप।

एक ही घर
छत और फर्श-सी
दूरी हममें।

बड़े विचित्र
मन-कैनवास पे
यादों के चित्र।

बूढ़ा संदूक
यादों की विरासत
सहेजे बैठा।

कोई न पास
सुधियों ने आकर
बँधाई आस।

जीवन क्या है ?
उड़ी-चढ़ी लो कटी
गिरी पतंग।

नारी कहो न !
क्या लता ही रहोगी ?
वृक्ष बनो न !

तितली देख
पकड़ने को बढ़े
हाथ अनेक।

प्रीत के पाँव
बिन पायल बाजें
सुनता गाँव।

करूँ प्रतीक्षा
ये मन महाकाव्य
बाँचे तो कोई।

बाँध ले मन
नेह बंदनवार
पी आये द्वार।

कटे जंगल
बढ़ा जंगलीपन
खोया इंसान।

रोको कटान
वृक्षों में बसते हैं
धरा के प्राण।

~ डॉ. सुरंगमा यादव

एक अकेला
ढूँढे जीवन साथी
नभ पे चंदा।

मस्त पवन
लहराती हवाएँ
काली घटाएँ।

कँवल खिले
झील की शोभा बढ़े
सूरज जले।

माँ का आँचल
है ममता की छाया
वट-वृक्ष सा।

ये गिली मिट्टी
सौंधी-सौंधी खुशबू
उर बेकाबू।

चल अकेला
राही रुक न जाना
अनन्त पथ।

दूर नभ पे
टिमटिमाते तारे
भटके राहें।

निर्जन राहें
ये निद्रित रजनी
भौंकते श्वान।

~ बन्दना गुप्ता

पीपल पात
बजाते करताल
जाड़े की रात।

मां मुस्कुराई
उधड़ते रिश्ते में
की तुरपाई।

~ सोनम

ओस भी खूब
बुझा ना पाए प्यास
तरसे दूब !

थिरकी आशा
नाच उठे अपने
सोये सपने !

प्रिया उदास
ज्यों चाँद को ग्रहण
दूर सजन !

~ केशव यादव 'सारथी'

गुप्त मंत्रणा
सूरज,चाँद,पृथ्वी
ग्रहण छवि।

~ त्रिलोचना कौर

गुरु पूर्णिमा
अनुपम आशीष
त्याग तपस्या।

अतृप्त प्यास
आंखों में बंधी पट्टी
कोल्हू के बैल।

सबको काट
अकेली वो पतंग
हत्थे उखड़ी।

उजले केश
शिथिल होता गात
सूखता पात।

~ गंगा पांडेय 'भावुक'

कठोर सत्य
जन्म औऱ मरण
फिर भी तथ्य।

शौकीन नानी
मुँह में नए दांत
लौटी जवानी।

रवि को चूमे
सुबह और शाम
उड़ते पंछी।

भोर सुहानी
नित नव जीवन
रखे उम्मीद।

वृक्षों के पत्ते
राम रजाई बिन
झड़ते नही।

दस्तक देती
तेज सर्द हवाएं
तन भेदती।

शरद रात
शबनम नहाए
दरख़्त पात।

कड़क ठंड
अलाव की तपिश
तन को भाए।

अबोध लल्ला
करे तोतली बात
माशा अल्लाह।

~ स्वाति गुप्ता 'नीरव'

सबने बाँची
नेह की यह चिट्ठी
मौसम लिखी।

~ रीमा दीवान चड्ढा

खरी न खोटी
कमाते हम सब
श्रम से रोटी।

लोग कहते
परवाह करोगे
सुख पाओगे।

झुकते नहीं
सच्चाई पे चलते
काबिल लोग।

~ सत्येन्द्र छिब्बर

रोयी रजनी
गले लगाया रवि
ओस पिघली।

देख शरद
ठिठुरे पान फूल
ओढ़ ली ओस।

मोती बिखरे
पक्षी आये चुगने
ओस गायब।

~ हिम्मत चोरड़िया

कोकून शांत
इल्ली बने तितली
पंख रंगीली।

भ्रमर फिरे
मांगे फूल दक्षिणा
पंख में वीणा।

पूर्णिमा चाँद
शशि स्नात तटिनी
ज्वार व भाटा।

रेत भुजंग
उधार लेता रंग
मरु के संग।

~ देवयानी बनर्जी

तपोवन है
गृहस्थ का जीवन
भोग साधना।

चिंतन-दीप
हर पल जलता
काव्य-सृजन।

नीड़ में पाखी
सावन की बारिश
भीगा बैठा है।

गुलशन में
कांटों पर खिलना
फूलों का जीना।

~ देवेन्द्र नारायण दास

हवा में झूमे
छूने को तितलियाँ
नन्हें से हाथ।

~ कल्पना कामदार

बाल दिवस
खिल उठी मुस्कान
नन्हा सा मन।

चांद का झूला
गगन ले उड़ा है
मेरा खिलौना।

~ पूनम मिश्रा 'पूर्णिमा'

शांत सागर
ले आता है भूकंप
भू-मंडल पे।

शांत कर ले
दुःख सागर मन
सुख मिलेगा।

अमृत मिला
सागर मंथन से
मोहिनी रूप।

~ गोपीकिशन शर्मा 'शूलेश'

मेघों से ऊंची
परिन्दों की उड़ान
सूरज छू लें !

अंतिम वस्त्र
जीवन का कफन
सब दफन !

जिंदगी खेत
चौपट हैं फसल
साँसें जरीब !

वक्त की कोख
स्वार्थों की मंथरा
मौन वेदना !

झिलमिलाते
रोशनी के घरौंदे
अट्टालिकाएं !

समय चक्र
परिधि पर नारी
प्रीत की देवी !

नीम का पेड़
रामबाण औषधि
घर का वैद्य।

रोहिडा के फूल
सुहाग का सिंदूर
दुल्हन वन।

तपता थार
पचकूटे का साग
खेजड़ी छांव।

चीड़ कतारें
सीमा पर प्रहरी
खड़े तैनात।

उगा है स्वप्न
धरती के गर्भ से
नया सूरज !

~ प्रवीण सिन्दल

अँगना वैद्य
देता आयुष-बल
तुलसीदल !

~ केशव यादव 'सारथी'

'शीत' के आते
'जलने' लगी आग
सौतिया-डाह।

~ आर. बी. अग्रवाल

अमलतास
हवा में लहराई
पीली ओढ़नी।

थिरके हाथ
चाक पे कुम्हार के
मिट्टी ले रूप।

~ सुजाता शिवेन

छाया कुहासा
शबनम की बूंदें
चमके दूर्वा।

बेटों का पिता
बंटवारे में बटा
दुखी बुढ़ापा।

~ शशि मित्तल 'अमर'

प्रेम की ज्वाला
टुकड़े हुए इश्क
कैसा है द्वेष।

~ कुसुम पंत 'उत्साही'

ओस की बूंदें
पत्तों की हथेली से
गिरी ज्यों मोती।

प्रार्थना खड़ी
मंदिर के द्वार पै
मूंदे नयन।

प्रश्न अधूरे
ख्वाबों के घेरे कैद
कैसे हो पूरे।

झूठ न बोलें
सौ टूकड़े होकर
मेरा दर्पण।

समता बोती
उगाती समर्पण
नारी दर्पण।

~ ज्ञान भंडारी

समय साक्ष्य
बनकर आया है
किया कटाक्ष।

अन्न का कण
व्यर्थ नहीं जा पाए
खुशी का क्षण।

सबकी सुनें
सार तत्व निकले
मन में गुनें।

स्वस्थ जीवन
हृदयस्थ शुचिता
निश्छल मन।

अनीति - कर्म
मानव - हित त्याज्य
समझें मर्म।

मुद - मंगल
वातावरण क्षीण
नित दंगल।

प्रकृति मौन
बहाती अश्रु - बिन्दु
देखेगा कौन।

नेह - पिपासा
अनुदिन बढ़ती
आहत आशा।

गठरी बन्द
अनुभव - अर्जित
उलझे फंद।

ठहरा पानी
आगे बढ़ती जाती
नई कहानी।

~ डॉ० विष्णु शास्त्री 'सरल'

रोता सावन
तर-ब-तर होता
मेरा दामन।

जड़ें रिश्तों की
होती रहीं खोखली
ज़मीन गली।

टूटा बंधन
साथ निभाता जाए
अकेलापन।

अलगाव में
स्पंदन का क्रंदन
रूठे जीवन।

भायी है ख़ूब
क़तरा भर मिली
जाड़े की धूप।

सूर्य किरन
भीतर तक आई
खिले सुमन।

~ निगम राज़

नीला आकाश
तारे टिमटिमाते
चांद मुस्काये।

चाँदनी रात
तारों की झिलमिल
सुंदर दृश्य।

नीला गगन
चांद शबाब पर
तारों की झुंड।

~ पुष्पा सिन्हा

कुंज निकुंज
खिली फुलवारियाँ
स्पर्श रश्मियाँ।

प्रकाश पुंज
उंडेल रहा रवि
निसर्ग पवि।

सीढ़ी पर्वत
चढ़ कर सूरज
देता दर्शन।

बर्फ से झाँके
सुनहरा आदित्य
हिम दैदीप्य।

~ शुचिता राठी

भूख की आग
बस दो जून रोटी
भागमभाग।

फूली सरसों
देखे फूल सा मुख
बीते बरसों।

कैसी ये आह
उगी मन दाह में
जीने की चाह।

रूह की चोट
दिखाएं भला किसे
सब रोबोट।

नेह के छंद
दुःख की कविताई
सुख पैबंद।

प्रेम अभीप्सा
अस्तित्व हुआ होम
शेष प्रतीक्षा।

नेह कस्तूरी
मन मृग बढ़ाए
ख़ुद से दूरी।

कड़ी हो धूप
कर्म से निखरता
जीवन रूप।

ग़रीबी रेखा
बंधा पेट पे ढेला
किसने देखा।

निर्धन पिता
जलती ही रहती
चिंता की चिता।

बचाना भाव
जग की परिभाषा
सिर्फ अभाव।

~ सुरेन्द्र बांसल

सौंधी महक
माटी के तल पर
पानी बरसा।

मेहँदी लगे
हाथों में शरमाया
गोरी का मुख।

पीले पत्ते सा
झर गया जीवन
बचा है बीज।

~ सतीश राठी

करवाचौथ
पति के भाव बढ़े
दो चाँद दिखे।

~ राजीव नामदेव
"राना लिधौरी"

सबका हक़
जिसका जितना था
मैंने दे दिया।

~ उग्रनाथ श्रीवास्तव

दीया जो बला
खींसे निपोरकर
अँधेरा चला।

रात की लाश
दिन पे टाँग गया
कोहरा घना।

किलक पड़ा
पराजित-सा खेत
सूर्य ज्यों चढ़ा।

पति की गली
एड़ियाँ उठा-उठा
उमर ढली।

मौन छतों पे
ढूँढती फिरे बातें
जेठ की रातें ।

~ भीकम सिंह

सूर्य प्रकाश
सिर चढ़ के बोला
उम्मीदें लाया।

चाँद उदास
धूल, धुआँ, तेजाब
लाता विनाश।

~ डॉ. नीना छिब्बर

बुरा नसीब
गरीब का है दुख
पेट की भूख।

नारी को शिला
पति जब बनाए
प्रभु उबारे।

~ सुभाष शर्मा

बिल्ली सी धूप
दीवारों को फाँदती
शाम ढलती।

~ अमिता शाह
'अमी'

प्रहरी सम
उत्तुंग हिमगिरि
धीर गंभीर।

मस्ती के डेरे
पंछी गीत सुनाएँ
साँझ-सवेरे।

चमके तारे
नभ में चमचम
हमें निहारें।

दिवस रैन
खो गया चितचैन
व्याकुल नैन।

~ आशा ज्योति

धूप बैठी है
घने वृक्ष के नीचे
छाँव बन के।

नीम पीपल
शहर में लगा दे
गाँव बना दे।

रेत पे नहीं
पत्थर पे लिखा है
मिटेगा कैसे।

यकीन मानो
झड़ते देखा हूँ मैं
हँसी के फूल।

तुम जो आये
बारिश बनकर
भीगा था मन।

हवा जो चली
पत्तियाँ गिर रहीं
साथ जाने को।

सूखे होठों पे
टपक आऊँगा मैं
ओस बन के।

धरा तुलसी
आकाश बरगद
मैं नागफनी।

चाय पी रही
ठंड धुंध को ओढ़े
मैं भी साथ हूँ।

ओस की बूँदें
धो दीं फूल पत्तियाँ
तुम चढ़ा लो।

~ अजय चरणम्

करार मिला
दिल-ओ-जिगर को
टीस के बाद।

मन मंदिर
जीर्ण-शीर्ण जर्जर
मूरत रूठी।

माँ ने जो पूछा
झूठ कहा न गया
सच है छुपा।

कड़वी सच
हलक से उतरी
अपच बढ़ी।

~ राजीव कुमार

पानी बरसा
धरती हरसाई
किसान ख़ुश।

सावन आया
कृषक सरसाया
खेत चहका।

दिलकश है
खगकुल गायन
हम भी गाएँ।

~ डॉ. रघुनाथ मिश्र 'सहज'

मन बावरा
बिछड़ी सखियों सी
देहरी सूनी।

शीत लहर
ढाने लगी कहर
गरीब घर।

शीतल भोर
शबनम मोती सी
तृण के कोर।

~ वृंदा पंचभाई

युगों से चली
परीक्षा से गुज़री
नारी ज़िंदगी।

खिलौना बनी
रूप बदल रही
माटी ज़िंदगी।

~ कश्मीरी लाल चावला

मन हर्षाते
खुशी के द्वार खुले
फूल मुस्काते।

नये दौर में
रिश्ते पुलकित हों
हर ठौर में।

मंद समीर
तन को स्वस्थ करे
मन को धीर।

परिंदे गाये
मस्ती के गगन में
धुन सजाये।

सीमा समीप
तत्पर हैं सैनिक
जलते दीप

तिल संक्रांति
नभ छुए पतंग
खुशी के संग।

पानी का योग
फसलें उगा करे
धरा की गोद।

~ श्रवण चोरनेले 'श्रवण'

पेड़ पे बैठे
खट्टी मीठी करते
बात जामुन।

छोड़ अकेला
उड़ जाते बादल
मैला आँचल।

अरमानों के
बाग़ ख़ूब सजाते
खिलते फूल।

दर्प के धागे
बुन कभी न पाते
प्रेम के वस्त्र।

पेड़ पीपल
मधुमक्खी का छत्ता
मधु की आस।

खेल तमाशा
चले सुबहो शाम
पेट की पूजा।

~ प्रतिमा प्रधान

पूस की रात
जलते हैं अलाव
शीत प्रकोप।

घना कोहरा
पवन का पहरा
सर्द मौसम।

प्रचंड शीत
पकवान से प्रीत
चली है रीत।

खिलती धूप
नया नवेला रूप
आई है ऊब।

करूं वंदन
नित अभिनंदन
मन चंदन।

~ कविता नेमा 'काव्या'

नकली फूल
बनावटी इन्सान
मंच की शान।

कविता छोटी
कहती बात बड़ी
दादी सयानी।

~ पुष्पा सिंघी

सर्द मौसम
अस्पताल में कांपे
तीमारदार।

~ मनीष कुमार श्रीवास्तव

आठों पहर
दौड़े बदहवास
महानगर।

पूछा स्वयं से
कौन हूँ मैं, क्या हूँ मैं
उत्तर शून्य।

की बगावत
नीव के पत्थरों ने
ढहे महल।

~ लक्ष्मी शंकर वाजपेयी

मृदु सरिता
भाव, बोध, प्रकृति
लघु कविता।

~ राजकिशोर राजपूत

माता है मूल
पिता तरु औ बच्चे
फल व फूल।

मन का बाग़
ख़ुशबू के टेरता
सुखद राग।

~ डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल

दिन कुहरा
सूरज पे पहरा
जमे रे हाथ।

जला अलाव
सेंक ले जरा हाथ
कैसा लगाव।

मक्के की रोटी
बथुअन की साग
गजब स्वाद।

पूस की रात
गजब की ठंडक
सही न जात।

~ सुधा मिश्रा द्विवेदी

वाहन गति
प्रदूषण बढ़ाए
साँस फुलाए।

जड़ चेतन
आकर्षण विहिन
शांति अपार।

~ कुन्दन पाटिल

घोर अंधेरा
निकले दिनकर
नित्य सवेरा।

बूढ़ी देहरी
जर्जर बरगद
दोनों प्रहरी।

आई बिटिया
हँसती फुलवारी
सारी दुनिया।

~ अमिता रवि दुबे

हाइकु लेखन के संदर्भ में....

कलेवर की दृष्टि से विश्व की सबसे छोटी कविता 'हाइकु' मूलतः एक जापानी काव्य विधा है। इस संदर्भ में गहन शोध से बहुत ही उपयोगी जानकारी हासिल की जा सकती है। हाइकु लेखन के संदर्भ में मेरे द्वारा अनुभूत कुछ बिंदु मैं क्रमवार यहां प्रस्तुत कर रहा हूँ।

1. हाइकु तीन पंक्तियों में 5-7-5 के वर्ण क्रम में लिखी जाने वाली 17 अक्षर की पूर्ण कविता है। यानी कवि को इन सत्रह अक्षरों में ही अपनी पूरी बात कहनी है। हाइकु में आधे अथवा संयुक्त अक्षरों को नहीं गिना जाता है।

2. लेकिन क्या उपरोक्त ढाँचे में लिखी गयी हर रचना हाइकु कही जा सकती है ? यहाँ यह ध्यान देने योग्य बात है कि ढाँचा भले ही 5-7-5 का हो जाये, लेकिन अगर बात सीधी सपाट भाषा में कही गयी है, तो उसे और कुछ भी कहें, मगर हाइकु ना कहें ।

3. हाइकु में कविता की अन्य कई विधाओं की तरह ही प्रतीक एवं बिम्ब उतने ही जरूरी हैं, जितनी शरीर को जीवित रखने के लिए साँसे जरूरी हैं।

4. हाइकु में चयनित शब्दों एवं शिल्प का बड़ा महत्व है। एक ही हाइकु में विरोधाभासी विषयों, वाक्यों एवं शब्दों का समावेश करके हाइकु को प्रभावी एवं रोचक बनाया जा सकता है।

5. हाइकु में अगर कोई प्रभावी संदेश एवं भाव हों, तो उसकी उपयोगिता स्वतः ही बढ़ जाती है। इसलिए हमारी कोशिश हों कि हम सदैव हमारी रचनाओं में बिम्ब और प्रतीक के साथ - साथ भाव एवं संदेश को भी प्रमुखता दें।

6. अमूमन यह देखा गया है कि प्रचलित विषयों पर लिखे जाने वाले हाइकु में कई बार भावों, शब्दों और यहाँ तक कि अनेक बार पंक्तियों अथवा विशेष रूप से कही गयी बातों में भी समानता दृष्टिगोचर हो जाती है। हाइकु जैसी छोटी कविता में इसके हो जाने की बहुत अधिक सम्भावना रहती है। हालांकि अधिकांशतः रचनाकार ऐसा

जान-बूझकर नहीं करते हैं, फिर भी अगर कभी अनजान में भी ऐसा हो जाये तो बताए जाने पर अपनी रचना को हटा देने जितना साहस एवं सामर्थ्य हम में होना चाहिए। इस बात पर गहरे अध्ययन के बाद, जो मैंने जाना है कि बहुधा यह समानता प्रचलित विषयों पर ही देखने को मिलती है। इस से बचने के लिए हमें हाइकु के लिए नए-नए विषयों को चुनना होगा। कदम-कदम पर ऐसे विषय बिखरे पड़े हैं, जो इतने अछूते हैं कि उनमें मौलिक, नए, भावपूर्ण, संदेशप्रद एवं उत्कृष्ट हाइकु लिखे जा सकते हैं। आवश्यकता है कि हाइकुकार प्रचलित विषयों का मोह छोड़कर, नए , अछूते एवं लीक से हटकर विषयों पर हाइकु लिखने का प्रयास करें।

7. प्रचलित विषयों पर भी लिखते वक्त यह ध्यान में अवश्य रहें कि हमारे भाव, विचार, शब्द एवं संदेश औरों से हटकर एवं विविधता लिए हों। इसके लिए हमें अधिक से अधिक पढ़ने की आदत डालनी होगी। वैसे किसी भी विषय पर लिखते वक्त, यह भाव एवं चिंतन रचनाकार के मन में हमेशा रहना चाहिए कि मैं कुछ अलग एवं नए तरीके से अपनी मौलिक बात कहूँ।

8. मौलिक, नई एवं अलग तरह से बात कहते वक्त यह भी ध्यान रखें कि हमारी रचना में तथ्यों, भावों एवं शब्दों के बीच आपसी सामंजस्यता जरूर हों। काव्य में कवि को रचनात्मक , कलात्मक एवं कल्पनात्मक आजादी जरूर दी जाती है, मगर यह छूट तथ्यविहीन या ऊटपटांग ना हों।

9. कई वरिष्ठ हाइकुकारों द्वारा हाइकु को "चरम अनुभूति के क्षण मात्र" की रचना कहा गया है। अर्थात किसी अन्य के हाइकु, विचार अथवा रचना को पढ़कर उसपर हाइकु लिखने की बजाए, हमें ऐसे विषयों पर हाइकु लिखने चाहिए, जिन्हें हमने स्वयं अनुभूत किया है। दूसरे के लिखे विचारों अथवा विषयों पर हाइकु कतई ना लिखें। जिस भी वस्तु, विषय, विचार, वर्ग आदि पर आप हाइकु लिखना चाहते हैं, आप उस संदर्भ में स्वयं अपने अनुभव को समृद्ध करते हुए लिखें, तभी हम मौलिक एवं स्तरीय हाइकु सृजन की ओर बढ़ पाएंगे। जैसे अगर "सड़क" पर हाइकु लिखना चाहते हैं, तो सड़क के आसपास आपको समय व्यतीत करते हुए अपने अनुभव के आधार पर कुछ रचनात्मक लिखना होगा, तभी आप हाइकु को साध पाएंगे।

10. हाइकु में कहावतों का उपयोग वर्जित है।

11. हाइकु लिखना इतना आसान नहीं है, जितना समझा जाता है। हाइकु एक तपस्या है। जब हमारी अनुभूति के साथ हमारे भाव, शब्द, बिम्ब और प्रस्तुति एकाकार हो जाती है, तभी एक उत्कृष्ट हाइकु निकलकर आता है। इसके लिए बड़े धैर्य की

जरूरत होती है। कई बार एक हाइकु बनने में महीनों लग जाते हैं तो कई बार मिनटों में बन जाता है। इसलिए हाइकु लिखने में जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए।

12. हाइकु के ढाँचे में एक साथ ढ़ेर सारी रचनाएँ लिख देना एक गम्भीर हाइकुकार होने की हमारी छवि को खराब कर सकता है। इसलिए हाइकु को लिखकर बार-बार पढ़ें, सोचें, समझें कि यह बेहतर बन पाया है या नहीं। अगर संतुष्ट ना हो पाएं तो विचार को कहीं नोट करके, एक तरफ रखकर उसपर चिंतन-मनन करते रहें। जब पूरी तरह से लगे, कि यह एक परिपूर्ण हाइकु है, तभी उसको कहीं प्रकाशित करने हेतु भेजें। इससे एक गंभीर हाइकुकार होने की हमारी छवि बरकरार रहेगी।

13. एक बहुत ही महत्वपूर्ण बात है कि अगर हम हाइकु को समझते हैं तो दूसरों के हाइकु पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते वक्त इस बात का भी ध्यान रखें कि क्या हम ग़लत प्रतिक्रिया व्यक्त करके रचनाकार को भ्रमित तो नहीं कर रहे हैं ? बंधुओं, दूसरों की रचना की तारीफ करना, उनका उत्साहवर्धन करना और उन्हें प्रेरणा देते रहना एक अच्छे रचनाकार के साथ-साथ एक संवेदनशील मानव की भी पहचान है। निश्चित रूप से हमें दूसरों के हाइकु पर अच्छी, सजग और उपयोगी प्रतिक्रिया देनी चाहिए। समय-समय पर अच्छे रचनाकारों का उत्साह भी बढ़ाना चाहिए। यह बेहद जरूरी भी है। अगर हम दूसरों को पढ़कर अच्छी रचनाओं को गुनेंगे नहीं तो हम भी विकास नहीं कर पायेंगे। लेकिन यह बात हमेशा ध्यान में रहें कि अगर कोई हाइकु आपको सटीक नहीं लग रहा है, तो उस पर प्रशंसात्मक टिप्पणी देना रचनाकार के विकास के मार्ग को अवरुद्ध करेगा, उन्हें भ्रमित ही करेगा। इस प्रकार हम भविष्य में एक अच्छे हाइकुकार होने की उनकी संभावनाओं को ही धूमिल करेंगे। ऐसा करके हम लेखक अथवा रचनाकार का नुकसान ही कर रहे हैं। इसलिए हाइकु को समझकर उसके अनुरूप ही प्रतिक्रिया दें। गलत प्रतिक्रिया से बचने के लिए मेरा सुझाव है कि किसी रचना में आपको क्या पसंद आया है, उसका भी एकाध पंक्ति में उल्लेख करते हुये अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करें तो आपके साथ-साथ अन्य भी समझ पाएँगे कि यह रचना क्यों उत्कृष्ट एवं अच्छी कही जा रही है।

बंधुओं, हाइकु के संदर्भ में मैंने जो सीखा, समझा एवं अनुभव किया, उसे आप लोगों के साथ बाँट रहा हूँ।

आप सब की टिप्पणियों की प्रतीक्षा में ....

~ अलंकार आच्छा

हाइकु मञ्जूषा के सदस्य

(1) डॉ. मिथिलेश दीक्षित (संरक्षक)

(1) रुबी दास (पंच वर्षीय), (2) डॉ. सुशीला सिंह (पंच वर्षीय), (3) तुकाराम पुंडलिकराव खिल्लारे (पंच वर्षीय), (4) देवयानी बनर्जी (पंच वर्षीय), (5) डॉ. श्रद्धा वाशिमकर (पंच वर्षीय), (6) सूर्यनारायण गुप्त सूर्य (पंच वर्षीय), (7) अलंकार आच्छा (पंच वर्षीय)

(1) सावित्री कुमार (वार्षिक), (2) सतीश राठी (वार्षिक), (3) डॉ. सुरंगमा यादव (वार्षिक), (4) अजय चरणम् (वार्षिक), (5) डॉ. कल्पना दुबे (वार्षिक), (6) अंजू श्रीवास्तव निगम (वार्षिक), (7) डॉ. सुभाषिनी शर्मा (वार्षिक), (8) डॉ. नीना छिब्बर (वार्षिक), (9) बन्दना गुप्ता (वार्षिक), (10) इन्दिरा किसलय (वार्षिक), (11) राकेश कुमार भारद्वाज (वार्षिक), (12) डॉ. विष्णु शास्त्री सरल (वार्षिक), (13) निर्मला सुरेन्द्रन (वार्षिक), (14) डॉ. निहाल चंद्र शिवहरे (वार्षिक), (15) पुष्पा सिंघी (वार्षिक), (16) डॉ. मंजू यादव 'मृदुल' (वार्षिक), (17) वर्षा अग्रवाल (वार्षिक), (18) दीपाली ठाकुर (वार्षिक), (19) श्रवण चोरनेले 'श्रवण' (वार्षिक), (20) किरण मिश्रा (वार्षिक), (21) आरती परीख (वार्षिक), (22) प्रतिमा प्रधान (वार्षिक), (23) कश्मीरी लाल चावला (वार्षिक), (24) वृंदा पंचभाई (वार्षिक), (25) आभा दवे (वार्षिक), (26) दिलीप सिंह दीपक (वार्षिक), (27) डॉ. पूर्वा शर्मा जी (वार्षिक), (1928) मधु गुप्ता (वार्षिक), (29) गोपीकिशन शर्मा (वार्षिक), (30) राधाबल्लभ अग्रवाल (वार्षिक), (31) सुरेन्द्र बांसल (वार्षिक)

सर्वभाषा ट्रस्ट
नई दिल्ली

से प्रकाशित जापानी विधा की पुस्तकें

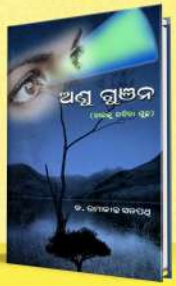

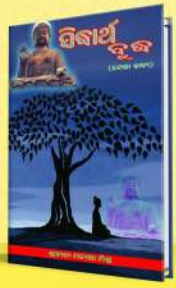

8178695606, 9205461387

www.sarvbhashatrust.com sbtpublication@gmail.com

प्रदीप कुमार दाश 'दीपक'

संपादक

हाइकु मञ्जूषा

प्रकाशन

सर्वभाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली

8178695606, 9205461387